

भूत साधना*****

इस क्रिया में माला आसन वस्त्र भोजन अदि का कोई विशेष विधान नहीं है

(मन्त्र की सिद्धि) :- निम्न लिखित मन्त्र को ग्रहण काल में या किसी भी शुभ पर्व काल में 378 की संख्या में जप कर सिद्ध करें मन्त्र सिद्धि के समय शरीर एवम् वस्त्रों पर नाजनी या कालाभूत इतर लगाये जप के पूर्व प्रेत राज का ध्यान करके उन्हें मीठे चावल या मसूर की दाल बनाकर भोग लगाये ये मन्त्र मन्दिर एवम् घर को छोड़ कर कहीं भी जप सकते हैं! मन्त्र की सिद्धि होने पर शरीर में जकड़न चेहरे पर कालिमा एवम् आईने में प्रतिबिम्ब धुंधला होना अदि लक्षण हो सकते हैं !

तत् पश्चात् अमावस्या की रात्रि में 9 बजे पर श्मशान में जाएँ एवम् पिली सरसों एवम् काला भूत इत्र साथ ले जाये वहां किसी भी स्थल पर बैठ कर अपने आसपास सिद्ध सुरक्षा मन्त्र द्वारा एक घेरा बनाये एवम् इत्र को वस्त्रों पर लगा लें एवम् इस मन्त्र का जाप शुरू कर दे जप 6 घण्टे करना है प्रत्येक एक घण्टे में एक भूत चैतन्य होने लगेगा 6 घण्टों में 6 भूत प्रत्यक्ष हो जायेंगे याद रखिये एक भूत को वश में करना मुश्किल होता है यहाँ 6 एक साथ होने हो सकता है जप के दौरान वे आपके किसी रिश्तेदार किसी मित्र या किसी डरावने रूप में आपको डराये शोर करे भयानक पत्थरो की बारिश करें किन्तु आप जब तक सुरक्षा घेरे में हैं कुछ नहीं होगा अंत में सभी 6 भूत आपके समक्ष उपस्थित होंगे तब उनसे सुरक्षा संबंधी वचन लेकर एवम् उनकी इच्छित वस्तु देने के एवम् जब भी बुलाये आने का वचन लेकर उन्हें जाने के लिए कहिये और घर लौट कर स्नान आदि से शुद्ध होकर हनुमान चालीसा का पाठ करें एक शर्त जो अक्सर भूत रखते हैं की पेट भरकर भोजन करवाओ अगर ऐसी कोई शर्त रखे तो ना मानियेगा

मन्त्र ॐ रुद्र भूत नाथाय षट्-भूत वशंकुरुं कुरुं आज्ञा पालय-पालज रुद्राय हुँ हुँ फट्

शुभमस्तु

अन्य किसी सहायता जानकारी अथवा किसी भी समस्या के समाधान के लिए सम्पर्क करें

प. अविचल पाराशर

(सम्राट् रुद्र)

8109939262